

IIMA PRESS RELEASE 2013-14



Workshop at IIMA discusses Models of Incubation for Enterprise Creation in HE Institutions

IIMA, November 19, 2013: The Indian Institute of Management, Ahmedabad (IIMA) hosted a two day workshop on **Models of Incubation for Enterprise Creation in Higher Education Institution** on November 18 and 19, 2013. Organised as a part of the Global Entrepreneurship Week, India, the workshop was supported by the Department of Science and Technology, Government of India and held under the aegis of IIMA's Centre for Innovation Incubation and Entrepreneurship.

Dwelling on issues of "***Efficacy and Sustainability***", the workshop discussed the role of incubators in building the Indian entrepreneurial ecosystem, inter-linkages between higher education institutions and incubators and the financial sustainability of the incubators. Policy makers, academics, corporates and Incubation managers participated in the workshop.

The inaugural day began with a panel discussion on "Emerging Role of Incubators in the Indian Higher Education System", moderated by Mr. Sunil Parekh: Advisor, Zydus Cadila Health Group and the key speakers being Mr. HK Mittal, Secretary, Technology Development Board, Prof. Pankaj Chandra: Professor, IIM Bangalore , Mr. Shoaib Ahmed, President, Tally Solutions. Exposing the existing environment on the ground Mr. HK Mittal initiated the discussion by questioning whether or not educational institutions are best places to start Incubators. Further, the key advantages of an educational institution such as environment of research, equipment for testing, knowledge and challenge of commercializing the plausible research and innovation were elaborated by Prof. Pankaj Chandra. Throwing a different angle Mr. Shoaib Ahmed argued that educational institutions should focus on changing the "The Defensive Mind-set" in the Indian society towards business. The discussion co-ordinated by Sunil Parekh suggested that incubators can potentially play an effective role for such enterprises where market failures are high and where innovation driven enterprises not only require funding but also a nurturing academic environment and mentoring.

A presentation by Prof. Rakesh Basant of IIMA and Prof. Sarah Cooper of the University of Edinburgh compared models of incubation and enterprise creation in UK and Indian HE institutions. It was argued in the presentation and subsequent discussions that, in the context of HE institutions sustainability and efficacy need to be seen more broadly. It should include, apart from the number of enterprises created and the financial sustainability, the economic impact in the region and creation of learning opportunities in the host educational institution. Such an approach would enhance the efficacy and the organizational sustainability of the incubators.

Most of the incubation centers across in HE institutions across the world are not financially sustainable and depend on State and University funds. A panel discussed the ways of making these incubators financially viable. Mr. Arumugam, Board Member, CIIE;

Mr. Manak Singh, Chief Evangelist, ASCENT & Former Executive Director, TiE Mumbai; Mr. Vivek Prakash, GM CSR, Jubilant, discussed the possibility/challenges in various sources of funding in incubators. Recent policy change in India permits corporates to use their CSR money to support incubators. The panel discussed different ways through which such monies can be mobilized. It was argued that matching of broader social objectives of the corporates and the incubators may be desirable for achieving this goal.

In a presentation Ms. Sunita Singh, Sr. Director, National Entrepreneurship Network, The Wadhvani Foundation elaborated on "Developing Metrics for Measuring Impact of Incubators". The discussion involving panelists Madhu Mehta, Chief Mentor, iCreate; Mr. Mahesh, CEO, NID Design Incubator and Prof. MR Dixit of IIMA discussed a variety of impact measures. It was argued that while measuring the impact, one should take into consideration the type of incubator and the needs of the various stake-holders. It was also suggested that an appropriate measurement of impact would also help raise resources to make incubators financially viable. This will include corporates who wish to use their CSR money to support incubators.

The workshop concluded that efficacy and sustainability of incubators have various dimensions and one should be sensitive to these dimensions while evaluating the impact of such endeavours.

आईआईएमए प्रेस विज्ञप्ति 2013-14

उच्च शिक्षण संस्थानों में उद्यम के निर्माण के लिए आईआईएमए में ऊष्मायन के मॉडल पर चर्चा कार्यशाला

आईआईएमए, 19 नवम्बर, 2013 : भारतीय प्रबंध संस्थान, अहमदाबाद (आईआईएमए) में 18 एवं 19 नवम्बर, 2013 को उच्च शिक्षण संस्थान में उद्यम निर्माण के लिए ऊष्मायन के मॉडल पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन हुआ। वैश्विक उद्यमिता सप्ताह, भारत के भाग रूप आयोजित यह कार्यशाला विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार द्वारा समर्थित है और आईआईएमए के अभिनव ऊष्मायन और उद्यमिता केंद्र के तत्वावधान में इसे आयोजित किया गया।

"प्रभावकारिता और स्थिरता" के मुद्दों पर आवास के आधार पर इस कार्यशाला में भारतीय उद्यमशीलता पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण में इन्क्यूबेटर्स की भूमिका, उच्च शिक्षण संस्थानों और इन्क्यूबेटर्स तथा इन्क्यूबेटर्स की वित्तीय स्थिरता के बीच अंतर - संबंधों की भूमिका पर चर्चा की गई। नीति निर्माताओं, शिक्षाविदों, कंपनियों और ऊष्मायन प्रबंधकों ने इस कार्यशाला में भाग लिया।

श्री सुनील पारेख, सलाहकार, जाइडस कैडिला हेल्थकेयर समूह और प्रमुख वक्ताओं श्री एच.के. मित्तल, सचिव, प्रौद्योगिकी विकास बोर्ड, प्रोफेसर पंकज चंद्रा, प्रोफेसर, आईआईएम बेंगलुरु, श्री शोएब अहमद, प्रमुख, टैली सॉल्यूशंस द्वारा संचालित *भारतीय उच्च शिक्षण प्रणाली में इनक्यूबेटर की उभरती भूमिका* पर चर्चा के साथ उद्घाटन दिवस का प्रारंभ हुआ। मौजूदा वातावरण की वास्तविकता को उजागर करते हुए श्री एच मित्तल .के.ने इन्क्यूबेटर्स को शुरू करने के लिए शिक्षण संस्थान सबसे अच्छे स्थान हैं या नहीं, की पूछताछ से चर्चा शुरू की। इसके अलावा, अनुसंधान के वातावरण, परीक्षण के उपकरण, प्रशंसनीय अनुसंधान और नवाचार के बाजारीकरण का ज्ञान एवं चुनौती जैसे शैक्षिक संस्थान के प्रमुख लाभों को प्रोफेसर पंकज चंद्रा द्वारा सविस्तार बताया गया। उस पर एक अलग दृष्टिकोण रखते हुए श्री शोएब अहमद ने *भारतीय समाज में व्यवसाय के प्रति "रक्षात्मक मानसिकता" बदलने के लिए शिक्षण संस्थानों ध्यान केन्द्रित करना चाहिए* कहकर बहस शुरू की। सुनील पारेख द्वारा समन्वित इस चर्चा में उन्होंने सुझाव दिया कि संभवतः ऐसे उद्यमों कि जिसमें बाजार में विफलताएँ अधिक हैं उनमें इन्क्यूबेटर एक प्रभावी भूमिका निभा सकते हैं जहाँ नवीनता संचालित उद्यमों में न केवल वित्त पोषण की आवश्यकता होती है बल्कि, शैक्षिक वातावरण को पोषण और सलाह की भी जरूरत रहती है।

आईआईएमए के प्रोफेसर राकेश बसंत और एडिनबर्ग विश्वविद्यालय के प्रोफेसर सारा कूपर द्वारा एक प्रस्तुति में ब्रिटेन एवं भारत के उच्च शिक्षण संस्थानों में ऊष्मायन और उद्यम सृजन के मॉडल की तुलना की गई। इस प्रस्तुति और उसके बाद हुई चर्चा में तर्क दिया गया था कि, उच्च शिक्षण संस्थानों के संदर्भ में स्थिरता और प्रभावकारिता को अधिक व्यापक रूप से देखा जाना चाहिए। उसमें असंख्य उद्यमों और वित्तीय स्थिरता के अलावा, क्षेत्र में आर्थिक प्रभाव और मेजबान शैक्षिक संस्था में पढ़ाई के अवसर का सृजन शामिल होने चाहिए। इस तरह के दृष्टिकोण से प्रभावकारिता में वृद्धि होगी और इन्क्यूबेटरों की संगठनात्मक स्थिरता भी बढ़ेगी।

विश्व के उच्च शिक्षण संस्थानों में अधिकांश ऊष्मायन केन्द्र आर्थिक रूप से स्थायी नहीं हैं और वे राज्य तथा विश्वविद्यालय कोष पर निर्भर करते हैं। इन इन्क्यूबेटरों को आर्थिक रूप से व्यवहार्य बनाने के तरीकों पर एक पैनल ने चर्चा की। श्री अरुमुगम, बोर्ड सदस्य, सीआईआईईई, श्री मानक सिंह, मुख्य प्रचारक, एससीईएनटी एवं पूर्व कार्यपालक निदेशक, टीआईईई मुम्बई, श्री विवेक प्रकाश, महाप्रबंधक, सीएसआर, जुबिलेंट ने इन्क्यूबेटरों में वित्त पोषण के विभिन्न स्रोतों में संभावना / चुनौतियों पर चर्चा की। भारत में हाल की नीति में हुए बदलाव से इन्क्यूबेटरों को समर्थन देने के लिए कॉरपोरेट जगत को उनके सीएसआर पैसों का उपयोग करने की परमिट मिल गई। इस पैनल ने विभिन्न तरीकों पर चर्चा की जिसके माध्यम से इस तरह पैसा जुटाया जा सकता है। कंपनियों और इन्क्यूबेटरों के व्यापक सामाजिक उद्देश्यों के मिलान के लिए इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए यह वांछनीय हो सकता है ऐसा तर्क दिया गया था।

एक प्रस्तुति में सुश्री सुनीता सिंह, वरिष्ठ निदेशक, राष्ट्रीय उद्यमिता नेटवर्क, वाधवानी फाउंडेशन ने "इन्क्यूबेटरों के प्रभाव को मापने के लिए मेट्रिक्स विकास" पर सविस्तार जानकारी दी। इस चर्चा पैनल में शामिल मधु मेहता, मुख्य मार्गदर्शक, आईक्रिएट, श्री महेश, मुख्य कार्यपालक अधिकारी, एनआईडी डिजाइन इनक्यूबेटर और आईआईएमए के प्रोफेसर एम.आर. दीक्षित ने प्रभाव उपायों की एक किस्म पर चर्चा की। प्रभाव को मापते समय, व्यक्ति को इनक्यूबेटर के प्रकार और विभिन्न हितधारकों की जरूरतों को ध्यान में रखना चाहिए ऐसा तर्क दिया गया था। यह भी सुझाव दिया गया कि प्रभाव के एक उचित माप से भी इन्क्यूबेटरों को आर्थिक रूप से व्यवहार्य बनाने के लिए संसाधन जुटाने में मदद मिलेगी। जो कॉरपोरेट्स इन्क्यूबेटरों को समर्थन करने के लिए उनके सीएसआर पैसे का उपयोग करना चाहते हैं वे भी इसमें शामिल होंगे।

इस कार्यशाला में यह निष्कर्ष निकाला गया कि इन्क्यूबेटरों की प्रभावकारिता और स्थिरता के विभिन्न आयाम हैं और इस तरह के प्रयासों के प्रभाव का मूल्यांकन करते समय इन आयामों के प्रति लोगों को संवेदनशील बनना होगा।